इब्रानियों

परमेश्वर अपने पुत्र के माध्यम से बोलता है

1 परमेश्वर ने अतीत में नबियों के द्वारा अनेक अवसरों पर अनेक प्रकार से हमारे पूर्वजों से बातचीत की। 2किन्तु इन अंतिम दिनों में उसने हमसे अपने पुत्र के माध्यम से बातचीत की, जिसे उसने सब कुछ का उत्तराधिकारी नियुक्त किया है और जिसके द्वारा उसने समूचे ब्रह्माण्ड की रचना की है। 3वह पुत्र परमेश्वर की महिमा का तेज–मंडल है तथा उसके स्वरूप का यथावत प्रतिनिधि। वह अपने समर्थ वचन के द्वारा सब वस्तुओं की स्थिति बनाये रखता है। सबको पापों से मुक्त करने का विधान करके वह स्वर्ग में उस महामहिम के दाहिने हाथ बैठ गया। 4इस प्रकार वह स्वर्गदूतों से उतना ही उत्तम बन गया जितना कि उनके नामों से वह नाम उत्तम है जो उसने उत्तराधिकार में पाया है।

5क्योंकि परमेश्वर ने किसी भी स्वर्गदूत से कभी ऐसा नहीं कहा: "तू मेरा पुत्र; आज मैं तेरा पिता बन गया हूँ।" *भजन संहिता 2:7*

और न हीं किसी स्वर्गदूत से उसने यह कहा है, "मैं उसका पिता बनूँगा, और वह मेरा पुत्र होगा।"

2 शमूएल 7:14

6और फिर वह जब अपनी प्रथम एवं महत्त्वपूर्ण संतान को संसार में भेजता है तो कहता है, "परमेश्वर के सब स्वर्गदूत उसका उपासना करें।" *व्यवस्था विवरण 32:43*

7स्वर्गदूत के विषय में बताते हुए वह कहता है:
"उसने अपने सब स्वर्गदूत को पवन बनाये और अपने सेवकों को आग की लपट बनाये।"

भजन संहिता 104:4

8किन्तु अपने पुत्र के विषय में वह कहता है: "हे परमेश्वर! तेरा सिंहासन शाश्वत है, तेरा राजदण्ड धार्मिकता है;

9तुझको धार्मिकता प्रिय है, और पापों से घृणा रही, इसलिए परमेश्वर, तेरे परमेश्वर ने तुझको चुना है, और उस आदर का आनन्द दिया। तुझको तेरे साथियों से कहीं अधिक दिया। *भजन संहिता 45:6–7*

10वह यह भी कहता है, "हे प्रभु, जब सृष्टि का जन्म हो रहा था, तूने धरती की नींव धरी। और ये सारे स्वर्ग तेरे हाथ का कतृत्व हैं।

11ये नष्ट हो जायेंगे पर तू चिरन्तन रहेगा, ये सब वस्त्र से फट जायेंगे।

12और तू परिधान सा उनको लपेटेगा। वे फिर वस्त्र जैसे बदल जायेंगे। किन्तु तू यूँ ही, यथावत रहेगा ही, तेरे काल का अंत युग युग न होगा।"

भजन संहिता 102: 25–27

13परमेश्वर ने कभी किसी स्वर्गदूत से ऐसा नहीं कहा: "तू मेरे दाहिने बैठ जा, जब तक मैं तेरे शत्रुओं को, तेरे चरण तल की चौकी न बना दूँ।"

भजन संहिता 110:1

14सभी स्वर्गदूत उद्धार पाने वालों की सेवा के लिये भेजी गयी सहायक आत्माएँ हैं।

सावधान रहने को चेतावनी

2 इसीलिये हमें और अधिक सावधानी के साथ, जो कुछ हमने सुना है, उस पर ध्यान देना चाहिये ताकि हम भटकने न पायें। 2क्योंकि यदि स्वर्गदूतों द्वारा दिया गया संदेश प्रभावशाली था तथा उसके प्रत्येक उल्लंघन और अवज्ञा के लिए उचित दण्ड दिया गया तो यदि हम ऐसे महान् उद्धार की उपेक्षा कर देते हैं, 3तो हम कैसे बच पायेंगे। इस उद्धार की पहली घोषणा प्रभु के द्वारा की गयी थी। और फिर जिन्होंने इसे सुना था, उन्होंने हमारे लिये इसकी पुष्टि की। 4परमेश्वर ने भी चिह्नों, आश्चर्यो तथा तरह–तरह के चमत्कारपूर्ण कर्मों तथा पवित्र आत्मा के उन उपहारों द्वारा, जो उसकी इच्छा के अनुसार बाँटे गये थे, इसे प्रमाणित किया।

उद्धारकर्ता मसीह का मानव देह धारण

5उस भावी संसार को, जिसकी हम चर्चा कर रहे हैं, उसने स्वर्गदूतों के अधीन नहीं किया 6बल्कि शास्त्र में किसी स्थान पर किसी ने यह साक्षी दी है:

"मनुष्य क्या है, जो तू उसकी सुधि लेता है? मानव पुत्र क्या है जिसके लिए तू चिंतित है?

7तू ने स्वर्गदूतों से उसे थोड़े से समय को किंचित
कम किया। उसके सिर मर महिमा और आदर का
राजमुकुट रख दिया।
8और उसके चरणों तले उसकी अधीनता मे सभी
कुछ रख दिया।" *भजन संहिता 8:4-6*

सब कुछ को उसके अधीन रखते हुए परमेश्वर ने
कुछ भी ऐसा नहीं छोड़ा जो उसके अधीन न हो। फिर
भी आजकल हम प्रत्येक वस्तु को उसके अधीन नहीं
देख रहे हैं। 9किन्तु हम यह देखते हैं कि वह यीशु
जिसको थोड़े समय के लिये स्वर्गदूतों से नीचे कर दिया
गया था, अब उसे महिमा और आदर का मुकुट पहनाया
गया है क्योंकि उसने मृत्यु की यातना झेली थी। जिससे
परमेश्वर के अनुग्रह के कारण वह प्रत्येक के लिये
मृत्यु का अनुभव करे।
10अनेक पुत्रों को महिमा प्रदान करते हुए उस परमेश्वर
के लिये जिसके द्वारा और जिसके लिये सब का अस्तित्त्व
बना हुआ है, उसे यह शोभा देता है कि वह उनके
छुटकारे के विधाता को यातनाओं के द्वारा सम्पूर्ण सिद्ध
करे।
11वे दोनों ही–वह जो मनुष्यों को पवित्र बनाता है
तथा वे जो पवित्र बनाए जाते हैं, एक ही परिवार के हैं।
इसीलिए यीशु उन्हें भाई कहने में लज्जा नहीं करता।
12उसने कहा:
"मैं सभा के बीच अपने बन्धुओं में तेरे नाम का
उदघोष करूँगा। सबके सामने मैं तेरे प्रशंसा गीत
गाऊँगा।" *भजन संहिता 22:22*

13और फिर, "मैं उसका विश्वास करूँगा।"
यशायाह 8:17

और फिर वह कहता है: "मैं यहाँ हूँ। और वे संतान
जो मेरे साथ हैं। जिनको मुझे परमेश्वर ने दिया है।"
यशायाह 8:18

14क्योंकि संतान माँस और लहू युक्त थी इसीलिये वह
भी उनकी इस मनुष्यता में सहभागी हो गया ताकि
अपनी मृत्यु के द्वारा वह उसे अर्थात् शैतान को नष्ट
कर सके जिसके पास मारने की शक्ति है। 15और उन
व्यक्तियों को मुक्त कर ले जिनका समूचा जीवन मृत्यु
के प्रति अपने भय के कारण दासता में बीता है। 16क्योंकि
यह निश्चित है कि वह स्वर्गदूतों की नहीं बल्कि इब्राहीम
के वंशजों की सहायता करता है। 17इसीलिये उसे हर
प्रकार से उसके भाइयों के जैसा बनाया गया ताकि वह
परमेश्वर की सेवा में दयालु और विश्वसनीय महायाजक
बन सके। और लोगों को उनके पापों की क्षमा दिलाने
के लिए बलि दे सके। 18क्योंकि उसने स्वयं उस समय,
जब उसकीपरीक्षा ली जा रही थी, यातनाएँ भोगी हैं।
इसलिये जिनकी परीक्षा ली जा रही है, वह उनकी
सहायता करने में समर्थ है।

यीशु मूसा से महान है

3अत: स्वर्गीय बुलावे में भागीदार हे पवित्र भाइयो
अपना ध्यान उस यीशु पर लगाये रखो जो
परमेश्वर का प्रतिनिधि तथा हमारे घोषित विश्वास के
अनुसार प्रमुख याजक है। 2जैसे परमेश्वर के समूचे
घराने में मूसा विश्वसनीय था, वैसे ही यीशु भी, जिसने
उसे नियुक्त किया था उस परमेश्वर के प्रति, विश्वासपूर्ण
था। 3जैसे भवन का निर्माण करने वाला स्वयं भवन से
अधिक आदर पाता है, वैसे ही यीशु मूसा से अधिक
आदर का पात्र माना गया। 4क्योंकि प्रत्येक भवन का
कोई न कोई बनाने वाला होता है, किन्तु परमेश्वर तो
हर वस्तु का सिरजनहार है। 5परमेश्वर के समूचे घराने
में मूसा एक सेवक के समान विश्वास पात्र था, वह उन
बातों का साक्षी था जो भविष्य में परमेश्वर के द्वारा
कही जानी थीं। 6किन्तु परमेश्वर के घराने में मसीह तो
एक पुत्र के रूप में विश्वास करने योग्य है और यदि
हम अपने साहस और उस आशा में विश्वास को बनाये
रखते हैं तो हम ही उसका घराना हैं।

अविश्वास के विरुद्ध चेतावनी

7इसीलिए पवित्र आत्मा कहता है:
8"यदि आज उसकी आवाज़ सुनो! अपने हृदय जड़
मत करो। जैसे बगावत के दिनों में किये थे। जब
मरुस्थल में परीक्षा हो रही थी।
9मुझे तुम्हारे पूर्वजों ने परखा था, उन्होंने मेरे धैर्य
की परीक्षा ली और मेरे कार्य देखे, जिन्हें मैं चालीस
वर्षों से करता रहा!
10वह यही कारण था जिससे मैं उन जनों से क्रोधित
था, और फिर मैंने कहा था, इनके हृदय सदा भटकते
रहते हैं ये मेरे मार्ग जानते नहीं हैं।'
11मैंने क्रोध में इसी से तब शपथ ले कर कहा था,
'ये कभी मेरी विश्राम-स्थल में सम्मिलित नहीं होंगे।'"
भजन संहिता 95:7-11

12हे भाइयो, देखते रहो कहीं तुममें से किसी के मन
में पाप और अविश्वास न समा जाय जो तुम्हें सजीव
परमेश्वर से ही दूर भटका दे। 13जब तक यह "आज"
का दिन कहलाता है, तुम प्रतिदिन परस्पर एक दूसरे
का ढाँढ़स बँधाते रहो ताकि तुममें से कोई भी पाप के
छलावे में पड़कर जड़ न बन जाये। 14यदि हम अंत तक
दृढ़ता के साथ अपने प्रारम्भ के विश्वास को थामे रहते
हैं तो हम मसीह के भागीदार बन जाते हैं। 15जैसा कि
कहा भी गया है:

"यदि आज उसकी आवाज सुनो, अपने हृदय जड़
मत करो जैसे बगावत के दिनों में किये थे।"

भजन संहिता 95:7-8

16भला वे कौन थे जिन्होंने सुना और विद्रोह किया?
क्या वे, वे ही नहीं थे जिन्हें मूसा ने मिस्र से बचा कर
निकाला था? 17वह चालीस बरसों तक किन पर क्रोधित
रहा? क्या उन्हीं पर नहीं जिन्होंने पाप किया था और
जिनके शव मरुस्थल में पड़े रहे थे? 18परमेश्वर ने
किनके लिये शपथ उठायी थी कि वे उसकी विश्राम–
स्थल में प्रवेश नहीं कर पायेंगे? क्या वे ही नहीं थे
जिन्होंने उसकी आज्ञा का उल्लंघन किया था? 19इस
प्रकार हम देखते हैं कि वे अपने अविश्वास के कारण
ही वहाँ प्रवेश पाने में समर्थ नहीं हो सके थे।

संतों के लिए विश्राम–स्थल

4 अत: जब उसकी विश्राम–स्थल में प्रवेश की प्रतिज्ञा
अब तक बनी हुई है तो हमें सावधान रहना चाहिये
कि तुममें से कोई अनुपयुक्त सिद्ध न हो। 2क्योंकि हमें
भी उन्हीं के समान सुसमाचार का उपदेश दिया गया है।
किन्तु जो सुसमाचार उन्होंने सुना, वह उनके लिये व्यर्थ
था। क्योंकि उन्होंने जब उसे सुना तो इसे विश्वास के
साथ धारण नहीं किया। 3अब देखो, हमने, जो विश्वासी
हैं, उस विश्राम–स्थल में प्रवेश पाया है। जैसा कि परमेश्वर
ने कहा भी है:

"मैंने क्रोध में इसीसे तब शपथ लेकर कहा था, 'ये
कभी मेरी विश्राम–स्थल में सम्मिलित नहीं होंगे।'"

भजन संहिता 95:11

जब संसार की सृष्टि करने के बाद उसका काम पूरा
हो गया था। 4उसने सातवें दिन के सम्बन्ध में इन शब्दों
में कहीं शास्त्रों में कहा है, "और फिर सातवें दिन
अपने सभी कामों से परमेश्वर ने विश्राम लिया।" 5और
फिर उपरोक्त सन्दर्भ में भी वह कहता है:"ये कभी मेरी
विश्राम–स्थल में सम्मिलित नहीं होंगे।"*

6जिन्हें पहले सुसमाचार सुनाया गया था अपनी
अनाज्ञाकारिता के कारण वे तो विश्रान्ति में प्रवेश नहीं
पा सके किन्तु औरों के लिए विश्राम–स्थल का द्वार
अभी भी खुला है। 7इसलिये परमेश्वर ने फिर एक
विशेष दिन निश्चित किया और उसे नाम दिया "आज"
कुछ वर्षों के बाद दाऊद के द्वारा परमेश्वर ने उस दिन
के बारे में शास्त्र में बताया था। जिसका उल्लेख
हमने अभी किया है:

"यदि आज उसकी आवाज सुनो, अपने हृदय जड़
मत करो।" *भजन संहिता 95:7-8*

8अत: यदि यहोशू उन्हें विश्राम–स्थल में ले गया होता
तो परमेश्वर बाद में किसी और दिन के विषय में नहीं
बताता। 9तो खैर जो भी हो। परमेश्वर के भक्तों के लिये
एक वैसी विश्राम–स्थल रहता ही है जैसी परमेश्वर
सातवें दिन विश्राम लिया। 10क्योंकि जो कोई भी परमेश्वर
की विश्राम–स्थल में प्रवेश करता है, अपने कर्मों से
विश्राम पा जाता है। वैसे ही जैसे परमेश्वर ने अपने
कर्मों से विश्राम पा लिया। 11सो आओ हम भी उस
विश्राम–स्थल में प्रवेश पाने के लिये प्रत्येक प्रयत्न करें
ताकि उनकी अनाज्ञाकारिता के उदाहरण का अनुसरण
करते हुए किसी का भी पतन न हो।

12परमेश्वर का वचन तो सजीव और क्रियाशील है,
वह किसी दुधारी तलवार से भी अधिक पैना है। वह
आत्मा और प्राण, सन्धियों और मज्जा तक में गहरा
बेध जाता है। वह मन की वृत्तियों और विचारों को
परख लेता है। 13परमेश्वर की दृष्टि से इस समूची सृष्टि
में कुछ भी ओझल नहीं है। उसकी आँखों के सामने,
जिसे हमें लेखा–जोखा देना है, हर वस्तु बिना किसी
आवरण के उघड़ी हुई है।

महान महायाजक यीशु

14इसीलिये क्योंकि परमेश्वर का पुत्र यीशु एक ऐसा
महान् महायाजक है, जो स्वर्गों में से होकर गया है तो
हमें अपने अंगीकृत एवं घोषित विश्वास को दृढ़ता के
साथ थामे रखना चाहिये। 15क्योंकि हमारे पास जो
महायाजक है, वह ऐसा नहीं है जो हमारी दुर्बलताओं के
साथ सहानुभूति न रख सके। उसे हर प्रकार से वैसे ही
परखा गया है जैसे हमें फिर भी वह सर्वथा पाप रहित
है। 16तो फिर आओ, हम भरोसे के साथ अनुग्रह पाने
परमेश्वर के सिंहासन की ओर बढ़ें ताकि आवश्यकता
पड़ने पर हमारी सहायता के लिए हम दया और अनुग्रह
को प्राप्त कर सकें।

5 प्रत्येक महायाजक मनुष्यों में से ही चुना जाता है।
और परमात्मा सम्बन्धी विषयों में लोगों का
प्रतिनिधित्व करने के लिये उसकी नियुक्ति की जाती है
ताकि वह पापों के लिये भेंट या बलियाँ चढ़ाये। 2क्योंकि
वह स्वयं भी दुर्बलताओं के अधीन है, इसलिये वह ना
समझों और भटके हुओं के साथ कोमल व्यवहार कर
सकता है। 3इसीलिये उसे अपने पापों के लिये और वैसे
ही लोगों के पापों के लिये बलियाँ चढ़ानी पड़ती हैं।

4इस सम्मान को कोई भी अपने पर नहीं लेता। जब
तक कि हारून के समान परमेश्वर की ओर से ठहराया
न जाता। 5इसी प्रकार मसीह ने भी महायाजक बनने
की महिमा को स्वयं ग्रहण नहीं किया, बल्कि परमेश्वर
ने उससे कहा,

"तू मेरा पुत्र है, आज मै तेरा पिता बना हूँ।"

भजन संहिता 2:7

"ये कभी ... होंगे" उत्पत्ति 2:2

6और एक अन्य स्थान पर भी वह कहता है, "तू एक शाश्वत याजक है, मलिकिसिदक* के जैसा!"

भजन संहिता 110:4

7यीशु ने इस धरती पर के जीवन काल में जो उसे मृत्यु से बचा सकता था, ऊँचे स्वर में पुकारते हुए और रोते हुए उससे प्रार्थनाएँ तथा विनतियाँ की थीं और आदरपूर्ण समर्पण के कारण उसकी सुनी गयी। 8यद्यपि वह उसका पुत्र था फिर भी यातनाएँ झेलते हुए उसने आज्ञा का पालन करना सीखा। 9और एक बार सम्पूर्ण बन जाने पर उन सब के लिए जो उसकी आज्ञा का पालन करते हैं, वह अनन्त छुटकारे का स्रोत बन गया। 10तथा परमेश्वर के द्वारा मिलिकिसिदक की परम्परा में उसे महायाजक बनाया गया।

पतन के विरुद्ध चेतावनी

11इसके विषय में हमारे पास कहने को बहुत कुछ है, पर उसकी व्याख्या कठिन है क्योंकि तुम्हारी समझ बहुत धीमी है। 12वास्तव में इस समय तक तो तुम्हें शिक्षा देने वाला बन जाना चाहिये था। किन्तु तुम्हें तो अभी किसी ऐसे व्यक्ति की ही आवश्यकता है जो तुम्हें नये सिरे से परमेश्वर की शिक्षा की प्रारम्भिक बातें ही सिखाये। तुम्हें तो बस अभी दूध ही चाहिये, ठोस आहार नहीं। 13जो अभी दुध-मुहा बच्चा ही है, उसे धार्मिकता के वचन की पहचान नहीं होती 14किन्तु ठोस आहार तो उन बड़ों के लिये ही होता है जिन्होंने अपने अनुभव से भले-बुरे में पहचान करना सीख लिया है।

6 अत: आओ, मसीह सम्बन्धी आरम्भिक शिक्षा को छोड़ कर हम परिपक्वता की ओर बढ़ें। हमें उन बातों की ओर नहीं बढ़ना चाहिए जिनसे हमने शुरूआत की जैसेमृत्यु की ओर ले जाने वाले कर्मो के लिए मनफिराव, परमेश्वर में विश्वास, 2बपतिस्माओं* की शिक्षा हाथ रखना, मरने के बाद फिर से जी उठना और वह न्याय जिससे हमारा भावी अनन्त जीवन निश्चित होगा। 3और यदि परमेश्वर ने चाहा तो हम ऐसा ही करेंगे।

4-6जिन्हें एक बार प्रकाश प्राप्त हो चुका है, जो स्वर्गीय वरदान का आस्वादन कर चुके हैं, जो पवित्र आत्मा के सहभागी हो गए हैं जो परमेश्वर के वचन की उत्तमता तथा आने वाले युग की शक्तियों का अनुभव कर चुके हैं, यदि वे भटक जायें तो उन्हें मनफिराव की ओर लौटा लाना असम्भव है। उन्होंने जैसे अपने ढंग से नये सिरे से परमेश्वर के पुत्र को फिर क्रूस पर चढ़ाया तथा उसे सब के सामने अपमान का विषय बनाया।

7वे लोग ऐसी धरती के जैसे हैं जो प्राय: होने वाली वर्षा के जल को सोख लेती है, और जोतने बोने वाले के लिए उपयोगी फसल प्रदान करती है, वह परमेश्वर की आशीष पाती है। 8किन्तु यदि वह धरती काँटे और गोखरू उपजाती है, तो वह बेकार की है। और उसे अभिशप्त होने का भय है। अन्त में उसे जला दिया जायेगा।

9हे प्रिय मित्रो, चाहे हम इस प्रकार कहते हैं किन्तु तुम्हारे विषय में हमें इससे भी अच्छी बातों का विश्वास है-बातें जो उद्धार से सम्बन्धित हैं। 10तुमने परमेश्वर के जनों की निरन्तर सहायता करते हुए जो प्रेम दर्शाया है, उसे और तुम्हारे दूसरे कामों को परमेश्वर कभी नहीं भुलायेगा। वह अन्यायी नहीं है। 11हम चाहते हैं कि तुममें से हर कोई जीवन भर ऐसा ही कठिन परिश्रम करता रहे। यदि तुम ऐसा करते हो तो तुम निश्चय ही उसे पा जाओगे जिसकी तुम आशा करते रहे हो। 12हम यह नहीं चाहते कि तुम आलसी हो जाओ। बल्कि तुम उनका अनुकरण करो जो विश्वास और धैर्य के साथ उन वस्तुओं को पा रहे हैं जिनका परमेश्वर ने वचन दिया था।

परमेश्वर की प्रतिज्ञा अटल है

13जब परमेश्वर ने इब्राहीम से प्रतिज्ञा की थी, तब स्वयं उससे बड़ा और कोई नहीं था, जिसकी शपथ ली जा सके, इसलिये अपनी शपथ लेते हुए वह 14कहने लगा, "निश्चय ही मैं तुझे आशीर्वाद दूँगा तथा मैं तुझे अनेक वंशज दूँगा।"* 15और इस प्रकार धीरज के साथ बाट जोहने के बाद उसने वह प्राप्त किया, जिसकी उससे प्रतिज्ञा की गयी थी।

16लोग उसकी शपथ लेते हैं, जो कोई उनसे महान होता है और वह शपथ सभी तर्क-वितर्को का अन्त करके जो कुछ कहा जाता है, उसे पक्का कर देती है। 17परमेश्वर इसे उन लोगों के लिये, पूरी तरह स्पष्ट कर देना चाहता था, जिन्हें उसे पाना था, जिसे देने की उसने प्रतिज्ञा की थी कि वह अपने प्रयोजन को कभी नहीं बदलेगा। इसीलिए अपने वचन के साथ उसने अपनी शपथ को जोड़ दिया। 18तो फिर यहाँ दो बातें हैं-उसकी प्रतिज्ञा और उसकी शपथ-जो कभी नहीं बदल सकतीं और जिनके बारे में परमेश्वर कभी झूठ नहीं कह सकता। इसलिए हम जो परमेश्वर के निकट सुरक्षा पाने को आये हैं और जो आशा उसने हमें दी है, उसे थामे हुए हैं, अत्यधिक उत्साहित हैं। 19इस आशा को हम आत्मा के सुदृढ़ और सुनिश्चित लंगर के रूप

मलिकिसिदक इब्राहिम के समया का एख याजक और सम्राट था। देखें उत्पत्ति 14:17-24

बपतिस्मा बपत्तिसमाओं से यहा या तो अभिप्राय मसीही बपतिस्मा से है या यहूदी रीति की जल में गोता लेने की बपतिस्मा से।

"निश्चय ... दूँगा" उत्पत्ति 22:17

में रखते हैं। यह परदे के पीछे भीतर से भीतर तक
पहुँचती है। 20जहाँ यीशु ने हमारी ओर से हम से पहले
प्रवेश किया। वह मिलिकिसिदक की परम्परा में सदा
सर्वदा के लिये प्रमुख याजक बन गया।

याजक मिलिकिसिदक

7 यह मिलिकिसिदक सालेम का राजा था और सर्वोच्च
परमेश्वर का याजक था। जब इब्राहीम राजाओं
को पराजित करके लौट रहा था तो वह इब्राहीम से
मिला और उसे आशीर्वाद दिया। 2और इब्राहीम ने उसे
उस सब कुछ में से जो उसने युद्ध में जीता था उसका
दसवाँ भाग प्रदान किया। (उसके नाम का पहला अर्थ
है–"धार्मिकता का राजा" और फिर उसका यह अर्थ
भी है–"सालेम का राजा" अर्थात् "शांति का राजा।")
3उसके पिता अथवा उसकी माँ अथवा उसके पूर्वजों
का कोई इतिहास नहीं मिलता है। उसके जन्म अथवा
मृत्यु का भी कहीं कोई उल्लेख नहीं है। परमेश्वर के
पुत्र के समान ही वह सदा-सदा के लिये याजक बना
रहता है।

4तनिक सोचो, वह कितना महान था। जिसे कुल
प्रमुख इब्राहीम तक ने अपनी प्राप्ति का दसवाँ भाग
दिया था। 5अब देखो व्यवस्था के अनुसार लेवी वंशज
जो याजक बनते हैं, लोगों से अर्थात् अपने ही बंधुओं से
दसवाँ भाग लें। यद्यपि उनके वे बंधु इब्राहीम के वंशज
हैं। 6फिर भी मिलिकिसिदक ने, जो लेवी वंशी भी नहीं
था, इब्राहीम से दसवाँ भाग लिया। और उस इब्राहीम को
आशीर्वाद दिया जिसके पास परमेश्वर की प्रतिज्ञाएँ थीं।
7इसमें कोई सन्देह नहीं है कि जो आशीर्वाद देता है वह
आशीर्वाद लेने वाले से बड़ा होता है। 8जहाँ तक लेवियों
का प्रश्न है, उनमें दसवाँ भाग उन व्यक्तियों द्वारा इकट्ठा
किया जाता है, जो मरण शील हैं किन्तु मिलिकिसिदक
का जहाँ तक प्रश्न है दसवाँ भाग उसके द्वारा एकत्र
किया जाता है जो शास्त्र के अनुसार अभी भी जीवित
है। 9तो फिर कोई यहाँ तक कह सकता है कि वह
लेवी जोदसवाँ भाग एकत्र करता है, उसने इब्राहीम के
द्वारा दसवाँ भाग प्रदान कर दिया। 10क्योंकि जब
मिलिकिसिदक इब्राहीमसे मिला था, तब भी लेवी अपने
पूर्वजों के शरीर में वर्तमान था।

11यदि लेवी सम्बन्धी याजकता के द्वारा सम्पूर्णता प्राप्त
की जा सकती (क्योंकि इसी के आधार पर लोगों को
व्यवस्था का विधान दिया गया था) तो किसी दूसरे
याजक के आने की आवश्यकता ही क्या थी? एक ऐसे
याजक की जो मिलिकिसिदक की परम्परा का हो, न
कि औरों की परम्परा का। 12क्योंकि जब याजकता
बदलती है, तो व्यवस्था में भी परिवर्तन होना चाहिये।
13जिसके विषय में ये बातें कही गयी हैं, वह किसी दूसरे
गोत्र का है, और उस गोत्र का कोई भी व्यक्ति कभी
वेदी का सेवक नहीं रहा। 14क्योंकि यह तो स्पष्ट ही है
कि हमारा प्रभु यहूदा का वंशज था और मूसा ने उस
गोत्र के लिए याजकों के विषय में कुछ नहीं कहा था।

यीशु मिलिकिसिदक के समान है

15और जो कुछ हमने कहा है, वह और भी स्पष्ट है
कि मिलिकिसिदक के जैसा एक दूसरा याजक प्रकट
होता है। 16वह अपनी वंशावली के नियम के आधार
पर नहीं, बल्कि एक अमर जीवन की शक्ति के आधार
पर याजक बना है। 17क्योंकि घोषित किया गया था: "तू
है एक याजक शाश्वत मिलिकिसिदक के जैसा" *

18पहला नियम इसलिये रद्द कर दिया गया क्योंकि
वह निर्बल और व्यर्थ था। 19(क्योंकि व्यवस्था के
विधान ने किसी को सम्पूर्ण सिद्ध नहीं किया।) और
एक उत्तम आशा का सूत्रपात किया गया जिसके द्वारा
हम परमेश्वर के निकट खिंचते हैं।

20यह बात भी महत्त्वपूर्ण है कि परमेश्वर ने यीशु को
शपथ के द्वारा प्रमुख याजक बनाया था। जबकि औरों
को बिना शपथ के ही प्रमुख याजक बनाया गया था।
21किन्तु यीशु तब एक शपथ से याजक बना था, जब
परमेश्वर ने उससे कहा था,

"प्रभु ने शपथ ली है, और वह अपना मन कभी नहीं
बदलेगा: 'तू एक शाश्वत याजक है।'"

भजन संहिता 110:4

22इस शपथ के कारण यीशु एक अच्छे वाचा की
जमानत बन गया है।

23अब देखो, ऐसे बहुत से याजक हुआ करते थे जिन्हें
मृत्यु ने अपने पदों पर नहीं बने रहने दिया। 24किन्तु
क्योंकि यीशु अमर है, इसलिये उसका याजकपन भी
सदा-सदा बना रहने वाला है। 25अत: जो उसके द्वारा
परमेश्वर तक पहुँचते हैं, वह उनका सर्वदा के लिए
उद्धार करने में समर्थ है क्योंकि वह उनकी मध्यस्थता
के लिये ही सदा जीता है।

26ऐसा ही महायाजक हमारी आवश्यकता को पूरा
कर सकता है, जो पवित्र हो, दोषरहित हो, शुद्ध हो,
पापियों के प्रभाव से दूर रहता हो, स्वर्गों से भी जिसे
ऊँचा उठाया गया हो। 27जिसके लिये दूसरे महायाजकों
के समान यह आवश्यक न हो कि वह दिन प्रतिदिन
पहले अपने पापों के लिये और फिर लोगों के पापों के
लिए बलियाँ चढ़ाये। उसने तो सदा-सदा के लिये उनके
पापों के हेतु स्वयं अपने आपको बलिदान कर दिया।
28किन्तु परमेश्वर ने शपथ के साथ एक वाचा दिया।
यह वाचा व्यवस्था के विधान के बाद आया और इस
वाचा ने प्रमुख याजक के रूप में पुत्र को नियुक्त किया
जो सदा-सदा के लिये सम्पूर्ण बन गया।

"तू ... जैसा" भजन. 110:4

नये वाचा का महा याजक

8 जो कुछ हम कह रहे हैं, उसकी मुख्य बात यह है:
निश्चय ही हमारे पास एक ऐसा महायाजक है जो
स्वर्ग में उस महा महिमावान के सिंहासन के दाहिने
हाथ विराजमान है। 2वह उस पवित्र गर्भ गृह में यानी
सच्चे तम्बू में जिसे परमेश्वर ने स्थापित किया था, न
कि मनुष्य ने, सेवा कार्य करता है।

3प्रत्येक महायाजक को इसलिये नियुक्त किया जाता
है कि वह भेंटों और बलिदानों–दोनों को ही अर्पित
करे। और इसीलिये इस महायाजक के लिए भी यह
आवश्यक था कि उसके पास भी चढ़ावे के लिये कुछ
हो। 4यदि वह धरती पर होता तो वह याजक नहीं हो
पाता क्योंकि वहाँ पहले से ही ऐसे व्यक्ति हैं जो व्यवस्था
के विधान के अनुसार भेंट चढ़ाते हैं। 5पवित्र उपासना
स्थान में उनकी सेवा–उपासना स्वर्ग के यथार्थ की
एक छाया प्रतिकृति है। इसीलिए जब मूसा पवित्र तम्बू
का निर्माण करने ही वाला था, तभी उसे चेतावनी दे दी
गयी थी। "ध्यान रहे कि तू हर वस्तु ठीक उसी प्रतिरूप
के अनुसार बनाये जो तुझे पर्वत पर दिखाया गया था।"
6किन्तु जो सेवा कार्य यीशु को प्राप्त हुआ है, वह
उनके सेवा कार्य से श्रेष्ठ है। क्योंकि वह जिस वाचा
का मध्यस्थ है वह पुराने वाचा से उत्तम है और उत्तम
वस्तुओं की प्रतिज्ञाओं पर आधारित है।

7क्योंकि यदि पहली वाचा में कोई भी खोट नहीं होता
तो दूसरे वाचा के लिये कोई स्थान ही नहीं रह जाता।
8किन्तु परमेश्वर को उन लोगों में खोट मिला। उसने
कहा:

"प्रभु घोषित करता है: वह समय आ रहा जब मैं
इस्राएल के घराने से और यहूदा के घराने से एक नई
वाचा करूँगा।

9यह वाचा वैसा नहीं होगा जैसा मैंने उनके पूर्वजों के
साथ उस समय किया था। जब मैंने उनका हाथ मिस्र से
निकाल लाने पकड़ा था। क्योंकि प्रभु कहता है,
वे मेरे वाचा के विश्वासी नहीं रहे। मैंने उनसे मुँह फेर
लिया।

10यह है वह वाचा जिसे मैं इस्राएल के घराने से
करूँगा। और फिर उसके बाद प्रभु घोषित करता है।
उनके मनों में अपनी व्यवस्था बसाऊँगा, उनके हृदयों
पर मैं उसको लिख दूँगा। मैं उनका परमेश्वर बनूँगा,
और वे मेरे जन होंगे।

11फिर तो कभी कोई भी, जन अपने पड़ोसी को ऐसे
न सिखायेगा अथवा कोई जन अपने बन्धु से न, कभी
कहेगा तुम प्रभु को पहचानो। क्योंकि तब तो वे सभी
छोटे से लेकर बड़े से बड़े तक मुझे जानेंगे।

12क्योंकि मैं उनके दुष्कर्मो को क्षमा करूँगा और
कभी उनके पापों को याद नहीं रखूँगा।"

यिर्मयाह 31:31–34

13इस वाचा को नया कहकर उसने पहले को व्यवहार
के अयोग्य ठहराया और जो पुराना पड़ रहा है तथा
व्यवहार के अयोग्य है, वह तो फिर शीघ्र ही लुप्त हो
जायेगा।

पुराने वाचा की उपासना

9 अब देखो पहले वाचा में भी उपासना के नियम थे।
तथा एक मनुष्य के हाथों का बना उपासना गृह
भी था। 2एक तम्बू बनाया गया था जिसके पहले कक्ष में
दीपाधार थे, मेज़ थी, और भेंट की रोटी थी। इसे पवित्र
स्थान कहा जाता था। 3दूसरे परदे के पीछे एक और
कमरा था जिसे परम पवित्र कहा जाता है। 4इसमें
सुगन्धित सामग्री के लिये सोने की वेदी और सोने की
मढ़ी वाचा की सन्दूक थी। इस सन्दूक में सोने का बना
मन्ना का एक पात्र था, हारून की वह छड़ी थी जिस पर
कोंपलें फूटी थीं तथा वाचा के पत्थर के पतरे थे।
5सन्दूक के ऊपर परमेश्वर की महिमामय उपस्थिति
के प्रतीक यानी करूब बने थे जो क्षमा के स्थान पर
छाया कर रहे थे। किन्तु इस समय हम इन बातों की
विस्तार के साथ चर्चा नहीं कर सकते।

6सब कुछ के इस प्रकार व्यवस्थित हो जाने के बाद
याजक बाहरी कक्ष में प्रति दिन प्रवेश करके अपनी
सेवा का काम करने लगे। 7किन्तु भीतरी कक्ष में
केवल प्रमुख याजक ही प्रवेश करता था और वह भी
साल में एक बार। वह बिना उस लहू के कभी प्रवेश
नहीं करता था जिसे वह स्वयं अपने द्वारा और लोगों
के द्वारा अनजाने में किये गये पापों के लिए भेंट
चढ़ाता था। 8इसके द्वारा पवित्र आत्मा यह दर्शाया
करता था कि जब तक अभी पहला तम्बू खड़ा हुआ
है, तब तक परम पवित्र स्थान का मार्ग उजागर नहीं
हो पाता।

9यह आज के युग के लिये एक प्रतीक है जो यह
दर्शाता है कि वे भेंटे और बलिदान जिन्हें अर्पित किया
जा रहा है, उपासना करने वाले की चेतना को शुद्ध
नहीं कर सकतीं। 10ये तो बस खाने–पीने और अनेक
पर्व विशेष–स्थानों के बाहरी नियम हैं और नयी व्यवस्था
के समय तक के लिए ही ये लागू होते हैं।

मसीह का लहू

11किन्तु अब मसीह इस और अच्छी व्यवस्था का,
जो अब हमारे पास है, महा याजक बनकर आ गया है।
उसने उस अधिक उत्तम और सम्पूर्ण तम्बू में से होकर
प्रवेश किया जो मनुष्य के हाथों की बनायी हुई नहीं
थी। अर्थात् जो सांसारिक नहीं है। 12बकरों और बछड़ों
के लहू को लेकर उसने प्रवेश नहीं किया था बल्कि
सदा–सर्वदा के लिये भेंट स्वरूप अपने ही रक्त को
लेकर परम पवित्र स्थान में प्रविष्ट हुआ था। इस प्रकार

उसने हमारे लिये पापों से अनन्त छुटकारे सुनिश्चित
कर दिए हैं।
13बकरों और साँडों का लहू तथा बछिया की भभूत
का उन पर छिड़का जाना, अशुद्धों को शुद्ध बनाता है
ताकि वे बाहरी तौर पर पवित्र हो जायें। 14जब यह सच
है तो मसीह का लहू कितना प्रभावशाली होगा। उसने
अनन्त आत्मा के द्वारा अपने आपको एक सम्पूर्ण बलि
के रूप में परमेश्वर को समर्पित कर दिया। सो उसका
लहू हमारी चेतना को उन कर्मों से छुटकारा दिलायेगा
जो मृत्यु की ओर ले जाते हैं ताकि हम सजीव परमेश्वर
की सेवा कर सकें। 15इसी कारण से मसीह एक नये
वाचा का मध्यस्थ बना ताकि जिन्हें बुलाया गया है, वे
उत्तराधिकार का अनन्त आशीर्वाद पा सकें जिसकी
परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की थी। अब देखो, पहले वाचा के
अधीन किये गये पापों से उन्हें मुक्त कराने के लिये
फिरौती के रूप में वह अपने प्राण दे चुका है।
16जहाँ तक वसीयतनामे* का प्रश्न है, तो उसके
लिए जिसने उसे लिखा है, उसकी मृत्यु को प्रमाणित
किया जाना आवश्यक है। 17क्योंकि कोई वसीयतनामा
केवल तभी प्रभावी होता है जब उसके लिखने वाले की
मृत्यु हो जाती है। जब तक उसको लिखने वाला जीवित
रहता है, वह कभी प्रभावी नहीं होता। 18इसीलिए पहली
वाचा भी बिना एक मृत्यु और लहू के गिराए कार्यान्वित
नहीं किया गया। 19मूसा जब व्यवस्था के विधान के
सभी आदेशों की सब लोगों को घोषणा कर चुका तो
उसने जल के साथ बकरों और बछड़ों के लहू को लाल
ऊन और हिस्सप की टहनियों से चर्म पत्रों और सभी
लोगों पर छिड़क दिया था। 20उसने कहा था, "यह उस
वाचा का लहू है, परमेश्वर ने जिसके पालन की आज्ञा
तुम्हें दी है।" 21उसने इसी प्रकार तम्बू और उपासना
उत्सवों में काम आने वाली हर वस्तु पर लहू छिड़का
था। 22वास्तव में व्यवस्था चाहती है कि प्राय: हर
वस्तु को लहू से शुद्ध किया जाये। और बिना लहू
बहाये क्षमा है ही नहीं।

मसीह का बलिदान पापों को धो डालता है

23तो फिर यह आवश्यक है कि वे वस्तुएँ जो स्वर्ग
की प्रतिकृति हैं, उन्हें पशुओं के बलिदानों से शुद्ध
किया जाये किन्तु स्वर्ग की वस्तुएँ तो इनसे भी उत्तम
बलिदानों से शुद्ध किए जाने की अपेक्षा करती हैं।
24मसीह ने मनुष्य के हाथों के बने परम पवित्र स्थान
में, जो सच्चे परम पवित्र स्थान की एक प्रतिकृति मात्र
था, प्रवेश नहीं किया। उसने तो स्वयं स्वर्ग में ही प्रवेश
किया ताकि अब वह हमारी ओर से परमेश्वर की
उपस्थिति में प्रकट हो। 25और न ही अपना बार-बार
बलिदान चढ़ाने के लिये उसने स्वर्ग में उस प्रकार
प्रवेश किया जैसे महायाजक उस लहू के साथ, जो
उसका अपना नहीं है, परम पवित्र स्थान में हर साल
प्रवेश करता है। 26नहीं तो फिर मसीह को सृष्टि के
आदि से ही अनेक बार यातनाएँ झेलनी पड़तीं। किन्तु
अब देखो, इतिहास के चरम बिन्दु पर अपने बलिदान
के द्वारा पापों का अंत करने के लिए वह सदा सदा के
लिये एक ही बार प्रकट हो गया है। 27जैसे एक बार
मरना और उसके बाद न्याय का सामना करना मनुष्य
की नियति है। 28इसलिए वैसे ही मसीह को, एक ही
बार अनेक व्यक्तियों के पापों को उठाने के लिये बलिदान
कर दिया गया। और वह पापों को वहन करने के लिए
नहीं, बल्कि जो उसकी बाट जोह रहे हैं, उनके लिए
उद्धार लाने को फिर दूसरी बार प्रकट होगा।

अंतिम बलिदान

10 व्यवस्था का विधान तो आने वाली उत्तम बातों
की छाया मात्र प्रदान करता है। अपने आप में
वे बातें यथार्थ नहीं हैं। इसीलिये उन्हीं बलियों के द्वारा
जिन्हें निरन्तर प्रतिवर्ष अनन्त रूप से दिया जाता रहता
है, उपासना के लिये निकट आने वालों को सदा-सदा
के लिये सम्पूर्ण सिद्ध नहीं किया जा सकता। 2यदि ऐसा
हो पाता तो क्या उनका चढ़ाया जाना बंद नहीं हो जाता?
क्योंकि फिर तो उपासना करने वाले एक ही बार में
सदा सर्वदा के लिये पवित्र हो जाते। और अपने पापों के
लिये फिर कभी स्वयं को अपराधी नहीं समझते। 3किन्तु
वे बलियाँ तो बस पापों की एक वार्षिक स्मृति मात्र हैं।
4क्योंकि साँडों और बकरों का लहू पापों को दूर कर
दे, यह सम्भव नहीं हैं।
5इसीलिये जब यीशु इस जगत् में आया था तो उसने
कहा था:
"तूने बलिदान और कोई भेंट नहीं चाहा, किन्तु मेरे
लिए एक देह तैयार की है।
6तू किसी किसी होमबलि से न ही पापबलि से प्रसन्न
नहीं हुआ।
7तब फिर मैंने कहा था, 'और पुस्तक में मेरे लिये
यह भी लिखा है, मैं यहाँ हूँ। हे परमेश्वर तेरी इच्छा पूरी
करने को आया हूँ।'" *भजन संहिता 40: 6-8*

8उसने पहले कहा था, "बलियाँ और भेंटें, होमबलियाँ
और पापबलियाँ न तो तू चाहता है और न ही तू उनसे
प्रसन्न होता है।" (यद्यपि व्यवस्था का विधान यह चाहता
है कि वे चढ़ाई जायें।) 9तब उसने कहा था, "मैं यहाँ हूँ।
मैं तेरी इच्छा पूरी करने आया हूँ।" तो वह दूसरी
व्यवस्था को स्थापित करने के लिये, पहली को रद्द
कर देता है। 10इसलिए परमेश्वर की इच्छा से एक

वसीयतनामे यूनानी में जो शब्द वाचा है वही शब्द वसीयत का अर्थ भी देता है।

बार ही सदा–सर्वदा के लिये यीशु मसीह की देह के बलिदान द्वारा हम पवित्र कर दिये गये।

11हर याजक एक दिन के बाद दूसरे दिन खड़ा हो होकर अपने धार्मिक कर्त्तव्यों को पूरा करता है। वह पुन: पुन: एक जैसी ही बलियाँ चढ़ाता है जो पापों को कभी दूर नहीं कर सकतीं।
12किन्तु याजक के रूप में मसीह तो पापों के लिये, सदा के लिए एक ही बलि चढ़ा कर परमेश्वर के दाहिने हाथ जा बैठा,
13और उसी समय से उसे अपने विरोधियों को उसके चरण की चौकी बना दिये जाने की प्रतीक्षा है।
14क्योंकि उसने एक ही बलिदान के द्वारा, जो पवित्र किये जा रहे हैं, उन्हें सदा–सर्वदा के लिए सम्पूर्ण सिद्ध कर दिया।

15इसके लिये पवित्र आत्मा भी हमें साक्षी देता है। पहले वह बताता है:

16"यह वह वाचा है जिसे मैं उनसे करूँगा। और फिर उसके बाद प्रभु घोषित करता है। अपनी व्यवस्था उनके हृदयों में बसाऊँगा मैं उनके मनो पर उनको लिख दूँगा।" *यिर्मयाह 31:33*

17वह यह भी कहता है: "उनके पापों और उनके दुष्कर्मों को और अब मैं कभी याद नहीं रखूँगा।" *यिर्मयाह 31:34*

18और फिर जब पाप क्षमा कर दिये गये तो पापों के लिये किसी बलि की कोई आवश्यकता रह ही नहीं जाती।

परमेश्वर के निकट आओ

19इसलिये भाइयो, क्योंकि यीशु के लहू के द्वारा हमें उस परम पवित्र स्थान में प्रवेश करने का निडर भरोसा है,
20जिसे उसने परदे के द्वारा, अर्थात् जो उसका शरीर ही है, एक नये और सजीव मार्ग के माध्यम से हमारे लिये खोल दिया है।
21और क्योंकि हमारे पास एक ऐसा महान याजक है जो परमेश्वर के घराने का अधिकारी है।
22तो फिर आओ, हम सच्चे हृदय, निश्चयपूर्ण विश्वास अपनी अपराधपूर्ण चेतना से हमें शुद्ध करने के लिये किए गए छिड़काव से युक्त अपने हृदयों को लेकर शुद्ध जल से धोये हुए अपने शरीरों के साथ परमेश्वर के निकट पहुँचते हैं।
23तो आओ जिस आशा को हमने अंगीकार किया है, हम अडिग भाव से उस पर डटे रहें क्योंकि जिसने हमें वचन दिया है, वह विश्वासपूर्ण है।

24तथा आओ, हम ध्यान रखें कि हम प्रेम और अच्छे कर्मों के प्रति एक दूसरे को कैसे बढ़ावा दे सकते हैं।
25हमारी सभाओं में आना मत छोड़ो। जैसी कि कुछों को तो वहाँ नहीं आने की आदत ही पड़ गयी है। बल्कि हमें तो एक दूसरे को उत्साहित करना चाहिये। और जैसा कि तुम देख ही रहे हो–कि वह दिन* निकट आ रहा है– इसलिए तुम्हें तो यह और अधिक करना चाहिये।

मसीह से मुँह मत फेरो

26सत्य का ज्ञान पा लेने के बाद भी यदि हम जानबूझ कर पाप करते ही रहते हैं फिर तो पापों के लिए कोई बलिदान बचा ही नहीं रहता।
27बल्कि फिर तो न्याय की भयानक प्रतीक्षा और भीषण अग्नि ही शेष रह जाती है जो परमेश्वर के विरोधियों को चट कर जायेगी।
28जो कोई मूसा की व्यवस्था के विधान का पालन करने सेमना करता है, उसे बिना दया दिखाये दो या तीन साक्षियों की साक्षी पर मार डाला जाता है।
29सोचो, वह मनुष्य कितने अधिक कड़े दंड का पात्र है, जिसने अपने पैरों तले परमेश्वर के पुत्र को कुचला, जिसने वाचा के उस लहू को, जिसने उसे पवित्र किया था, एक अपवित्र वस्तु माना और जिसने अनुग्रह की आत्मा का अपमान किया।
30क्योंकि हम उसे जानते हैं जिसने कहा था: "बदला लेना काम है मेरा, मैं ही बदला लूँगा।"* और फिर, "प्रभु अपने लोगों का न्याय करेगा।"*

31किसी पापी का सजीव परमेश्वर के हाथों में पड़ जाना एक भयानक बात है।

विश्वास बनाये रखो

32आरम्भ के उन दिनों को याद करो जब तुमने प्रकाश पाया था, और उसके बाद जब तुम कष्टों का सामना करते हुए कठोर संघर्ष में दृढ़ता के साथ डटे रहे थे।
33तब कभी तो सब लोगों के सामने तुम्हें अपमानित किया गया और सताया गया और कभी जिनके साथ ऐसा बर्ताव किया जा रहा था, तुमने उनका साथ दिया।
34तुमने, जो बंदीगृह में पड़े थे, उनसे सहानुभूति की तथा अपनी सम्पत्ति का जब्त किया जाना सहर्ष स्वीकार किया क्योंकि तुम यह जानते थे कि स्वयं तुम्हारे अपने पास उनसे अच्छी और टिकाऊ सम्पत्तियाँ हैं।

35सो अपने निडर विश्वास को मत त्यागो क्योंकि इसका भरपूर प्रतिफल दिया जायेगा।
36तुम्हें धैर्य की आवश्यकता है ताकि तुम जब परमेश्वर की इच्छा पूरी कर चुको तो जिसका वचन उसने दिया है, उसे तुम पा सको।
37क्योंकि बहुत शीघ्र ही, "जिसको आना है वह शीघ्र ही आयेगा,

38मेरा धर्मी जन विश्वास से जियेगा और यदि वह पीछे हटेगा तो मैं उससे प्रसन्न न रहूँगा।" *हबक्कूक 2:3–4*

वह दिन अर्थात् वह जब मसीह फिर प्रकट होगा।

"बदला ... लूँगा" व्यवस्था. 32:35

"प्रभु ... करेगा" भजन. 135:14

39किन्तु हम उनमें से नहीं हैं जो पीछे हटते हैं और
नष्ट हो जाते हैं बल्कि उनमें से हैं जो विश्वास करते हैं
और उद्धार पाते हैं।

विश्वास की महिमा

11 विश्वास का अर्थ है, जिसकी हम आशा करते
हैं, उस के लिए निश्चित होना। और विश्वास
का अर्थ है कि हम चाहे किसी वस्तु को देख नहीं रहे
हों किन्तु उसके अस्तित्त्व के विषय में निश्चित होना
कि वह है। 2इसी कारण प्राचीन काल के लोगों को
परमेश्वर का आदर प्राप्त हुआ था।

3विश्वास के आधार पर ही हम यह जानते हैं कि
परमेश्वर के आदेश से ब्रह्माण्ड की रचना हुई थी।
इसीलिये जो दृश्य है, वह दृश्य से ही नहीं बना है।

4हाबिल ने विश्वास के कारण ही परमेश्वर को कैन
से उत्तम बलि चढ़ाई थी। विश्वास के कारण ही उसे
एक धर्मी पुरुष के रूप में तब सम्मान मिला था जब
परमेश्वर ने उसकी भेंटों की प्रशंसा की थी। और
विश्वास के कारण ही वह आज भी बोलता है यद्यपि
वह मर चुका है।

5विश्वास के कारण ही हनोक को इस जीवन से
ऊपर उठा लिया गया ताकि उसे मृत्यु का अनुभव न
हो। परमेश्वर ने क्योंकि उसे दूर हटा दिया था इसलिये
वह पाया नहीं गया। क्योंकि उसे उठाये जाने से पहले
परमेश्वर को प्रसन्न करने वाले के रूप में उसे सम्मान
मिल चुका था। 6और विश्वास के बिना तो परमेश्वर
को प्रसन्न करना असम्भव है। क्योंकि हर एक वह जो
उसके पास आता है, उसके लिये यह आवश्यक है कि
वह इस बात का विश्वास करे कि परमेश्वर का अस्तित्त्व
है और वे जो उसे सच्चाई के साथ खोजते हैं, वह उन्हें
उसका प्रतिफल देता है।

7विश्वास के कारण ही नूह को जब उन बातों की
चेतावनी दी गयी जो उसने देखी तक नहीं थीं तो उसने
पवित्र भयपूर्वक अपने परिवार को बचाने के लिये एक
नाव का निर्माण किया था। अपने विश्वास से ही उसने
इस संसार को दोषपूर्ण माना और उस धार्मिकता का
उत्तराधिकारी बना जो विश्वास से आती है।

8विश्वास के कारण ही, जब इब्राहीम को ऐसे स्थान
पर जाने के लिये बुलाया गया था, जिसे बाद में उत्तराधिकार
के रूप में उसे पाना था, यद्यपि वह यह जानता तक
नहीं था कि वह कहाँ जा रहा है, फिर भी उसने आज्ञा
मानी और वह चला गया। 9विश्वास के कारण ही जिस
धरती को देने का उसे वचन दिया गया था, उस पर
उसने एक अनजाने परदेसी के समान अपना घर बना
कर निवास किया। वह तम्बुओं में वैसे ही रहा जैसे
इसहाक और याकूब रहे थे जो उसके साथ परमेश्वर
की उसी प्रतिज्ञा के उत्तराधिकारी थे। 10वह सुदृढ़ आधार
वाली उस नगरी की बाट जोह रहा था जिसका शिल्पी
और निर्माणकर्त्ता परमेश्वर है।

11विश्वास के कारण ही, इब्राहीम जो बूढ़ा हो चुका
था और सारा जो स्वयं बाँझ थी, जिसने वचन दिया था,
उसे विश्वसनीय समझकर गर्भवती हुई और इब्राहीम
को पिता बना दिया। 12और इस प्रकार इस एक ही
व्यक्ति से जो मरियल सा था, आकाश के तारों जितनी
असंख्य और सागर-तट के रेत-कणों जितनी अनगिनत
संतानें हुई।

13विश्वास को अपने मन में लिए हुए ये लोग मर
गए। जिन वस्तुओं की प्रतिज्ञा दी गयी थी, उन्होंने वे
वस्तुएँ नहीं पायीं। उन्होंने बस उन्हें दूर से ही देखा और
उनका स्वागत किया तथा उन्होंने यह मान लिया कि वे
इस धरती पर परदेसी और अनजाने हैं। 14वे लोग जो
ऐसी बातें कहते हैं, वे यह दिखाते हैं कि वे एक ऐसे देश
की खोज में हैं जो उनका अपना है। 15यदि वे उस देश
के विषय में सोचते जिसे वे छोड़ चुके हैं तो उनके फिर
से लौटने का अवसर रहता 16किन्तु उन्हें तो स्वर्ग के
एक श्रेष्ठ प्रदेश की उत्कट अभिलाषा है। इसीलिये
परमेश्वर को उनका परमेश्वर कहलाने में संकोच
नहीं होता क्योंकि उसने तो उनके लिये एक नगर
तैयार कर रखा है।

17विश्वास के कारण ही इब्राहीम ने, जब परमेश्वर
उसकी परीक्षा ले रहा था, इसहाक की बलि चढ़ाई।
वही जिसे प्रतिज्ञाएँ प्राप्त हुई थीं, अपने एक मात्र पुत्र की
जब बलि देने वाला था 18तो यद्यपि परमेश्वर ने उससे
कहा था, "इसहाक के द्वारा ही तेरा वंश बढ़ेगा।" 19किन्तु
इब्राहीम ने सोचा कि परमेश्वर मरे हुए को भी जिला
सकता है और यदि आलंकारिक भाषा में कहा जाये तो
उसने इसहाक को मृत्यु से फिर वापस पा लिया। 20विश्वास
के कारण ही इसहाक ने याकूब और इसाऊ को उनके
भविष्य के विषय में आशीर्वाद दिया। 21विश्वास के
कारण ही याकूब ने, जब वह मर रहा था, यूसुफ के
हर पुत्र को आशीर्वाद दिया और अपनी लाठी के ऊपरी
सिरे पर झुक कर सहारा लेते हुए परमेश्वर की उपासना
की।

22विश्वास के कारण ही युसुफ ने जब उसका अंत
निकट था, इस्राएल निवासियों के मिस्र से निर्गमन के
विषय में बताया तथा अपनी अस्थियों के बारे में आदेश
दिये।

23विश्वास के आधार पर ही, मूसा के माता-पिता
ने, मूसा के जन्म के बाद उसे तीन महीने तक छुपाये
रखा क्योंकि उन्होंने देख लिया था कि वह कोई सामान्य
बालक नहीं था और वे राजा की आज्ञा से नहीं डरे।

24विश्वास से ही, मूसा जब बड़ा हुआ तो उसने फिरौन
की पुत्री का बेटा कहलाने से इन्कार कर दिया। 25उसने
पाप के क्षणिक सुख भोगों की अपेक्षा परमेश्वर के संत

जनों के साथ दुर्व्यवहार झेलना ही चुना। 26उसने मसीह
के लिये अपमान झेलने को मिस्र के धन भंडारों की
अपेक्षा अधिक मूल्यवान माना क्योंकि वह अपना
प्रतिफल पाने की बाट जोह रहा था। 27विश्वास के
कारण ही, राजा के कोप से न डरते हुए उसने मिस्र का
परित्याग कर दिया; वह डटा रहा, मानो उसे अदृश्य
परमेश्वर दिख रहा हो।

28विश्वास से ही, उसने फसह पर्व और लहू छिड़कने
का पालन किया, ताकि पहली संतानों का विनाश करने
वाला, इस्राएल की पहली संतान को छू तक न पाये।

29विश्वास के कारण ही, लोग लाल सागर से ऐसे पार
हो गये जैसे वह कोई सूखी धरती हो। किन्तु जब मिस्र
के लोगों ने ऐसा करना चाहा तो वे डूब गये।

30विश्वास के कारण ही, यरिहो का नगर–परकोटा
लोगों के सात दिन तक उसके चारों ओर परिक्रमा कर
लेने के बाद ढह गया।

31विश्वास के कारण ही, राहब नाम की वेश्या आज्ञा
का उल्लंघन करने वालों के साथ नहीं मारी गयी थी
क्योंकि उसने गुप्तचरों का स्वागत सत्कार किया था।
32अब मैं और अधिक क्या कहूँ। गिदोन, बाराक,
शिमशोन, यिफतह, दाऊद, शमुएल तथा उन नबियों
की चर्चा करने का मेरे पास समय नहीं है 33जिन्होंने
विश्वास से, राज्यों को जीत लिया, धार्मिकता के कार्य
किये तथा परमेश्वर ने जो देने का वचन दिया था, उसे
प्राप्त किया। जिन्होंने सिंहों के मुँह बन्द कर दिये,
34लपलपाती लपटों के क्रोध को शांत किया तथा तलवार
की धार से बच निकले; जिनकी दुर्बलता ही शक्ति में
बदल गयी; और युद्ध में जो शक्तिशाली बने तथा जिन्होंने
विदेशी सेनाओं को छिन्न–भिन्न कर डाला। 35स्त्रियों ने
अपने मरे हुओं को फिर से जीवित पाया। बहुतों को
सताया गया, किन्तु उन्होंने छुटकारा पाने से मना कर
दिया ताकि उन्हें एक और अच्छे जीवन में पुनरुत्थान
मिल सके।

36कुछ को उपहासों और कोड़ों का सामना करना
पड़ा जबकि कुछ को ज़ंजीरों से जकड़ कर बंदी गृह में
डाल दिया गया। 37कुछ पर पथराव किया गया। उन्हें
आरे से चीर कर दो फाँक कर दिया गया, उन्हें तलवार
से मौत के घाट उतार दिया गया। वे ग़रीब थे, उन्हें
यातनाएँ दी गई और उनके साथ बुरा व्यवहार किया
गया। वे भेड़–बकरियों की खालें ओढ़े इधर–उधर
भटकते रहे। 38यह संसार उनके योग्य नहीं था। वे
बियाबानों, और पहाड़ों में घूमते रहेऔर गुफाओं और
धरती में बने बिलों में, छिपते–छिपाते फिरे।

39अपने विश्वास के कारण ही, इन सब को सराहा
गया। फिर भी परमेश्वर को जिसका महान वचन उन्हें
दिया था, उसे इनमें से कोई भी नहीं पा सका। 40परमेश्वर
के पास अपनी योजना के अनुसार हमारे लिये कुछ
और अधिक उत्तम था जिससे उन्हें भी बस हमारे साथ
ही सम्पूर्ण सिद्ध किया जाये।

परमेश्वर अपने पुत्रों को सिधाता है

12 क्योंकि हम साक्षियों की ऐसी इतनी बड़ी भीड़
से घिरे हुए हैं, जो हमें विश्वास का अर्थ क्या है
इस की साक्षी देती है इसलिये आओ बाधा पहुँचाने वाली
प्रत्येक वस्तु को और उस पाप को जो सहज में ही हमें
उलझा लेता है झटक फेंकें और वह दौड़ जो हमें दौड़नी
है, आओ धीरज के साथ उसे दौड़ें। 2हमारे विश्वास के
अगुआ और उसे सम्पूर्ण सिद्ध करने वाले यीशु पर
आओ हम दृष्टि लगायें। जिसने अपने सामने उपस्थित
आनन्द के लिये क्रूस की यातना झेली, उसकी लज्जा
की कोई चिंता नहीं की और परमेश्वर के सिंहासन के
दाहिने हाथ विराजमान हो गया। 3उसका ध्यान करो
जिसने पापियों का ऐसा विरोध इसलिये सहन किया
ताकि थक कर तुम्हारा मन हार न मान बैठे।

4पाप के विरुद्ध अपने संघर्ष में तुम्हें इतना नहीं
अड़ना पड़ा है कि अपना लहू ही बहाना पड़ा हो। 5तुम
उस साहसपूर्ण वचन को भूल गये हो। जो तुम्हें पुत्र के
नाते सम्बोधित है:

"हे मेरे पुत्र, प्रभु के अनुशासन का तिरस्कार मत
कर, उसकी फटकार का बुरा कभी मत मान, 6क्योंकि
प्रभु उनको डाँटता है जिनसे वह प्रेम करता है। वैसे ही
जैसे पिता उस पुत्र को दण्ड देता, जो उसको अति प्रिय
है।" *नीतिवचन 3:11–12*

7कठिनाई को अनुशासन के रूप में सहन करो।
परमेश्वर तुम्हारे साथ अपने पुत्र के समान व्यवहार
करता है। ऐसा पुत्र कौन होगा जिसे अपने पिता के द्वारा
ताड़ना न गया हो? 8यदि तुम्हें वैसे ही नहीं ताड़ना दी
गयी है जैसे सबको ताड़ना दी जाती है तो तुम अपने
पिता से पैदा हुए पुत्र नहीं हो और सच्ची संतान नहीं हो।
9और फिर यह भी कि इन सब को वे पिता भी जिन्होंने
हमारे शरीर को जन्म दिया है, हमें ताड़ना देते हैं। और
इसके लिये हम उन्हें मान देते हैं तो फिर हमें अपनी
आत्माओं के पिता के अनुशासन के तो कितना अधिक
अधीन रहते हुए जीना चाहिये। 10हमारे पिताओं ने थोड़े
से समय के लिये जैसा उन्होंने उत्तम समझा, हमें ताड़ना
दी, किन्तु परमेश्वर हमें हमारी भलाई के लिये ताड़ना
दी है, जिससे हम उसकी पवित्रता के सह भागी हो सकें।
11जिस समय ताड़ना दी जा रहा होता है, उस समय
ताड़ना अच्छी नहीं लगता, बल्कि वह दुखद लगता है
किन्तु कुछ भी हो, वे जो ताड़ना का अनुभव करते हैं,
उनके लिये यह आगे चलकर नेकी और शांति का
सुफल प्रदान करता है।

12इसलिये अपनी दुर्बल बाहों और निर्बल घुटनों को
सबल बनाओ। 13अपने पैरों के लिए तू समतल मार्ग
बना। ताकि जो लँगड़ा है, वह अपंग नहीं, वरन चंगा हो
जाये।

चेतावनी: परमेश्वर को नकारो मत

14सभी के साथ शांति के साथ रहने और पवित्र होने
के लिये हर प्रकार से प्रयत्नशील रहो; बिना पवित्रता
के कोई भी प्रभु का दर्शन नहीं कर पायेगा। 15इस बात
का ध्यान रखो कि परमेश्वर के अनुग्रह से कोई भी
विमुख न हो जाये और तुम्हें कष्ट पहुँचाने तथा बहुतसों
को विकृत करने के लिये कोई झगड़े की जड़ न फूट
पड़े। 16देखो कि कोई भी व्यभिचार न करे अथवा उस
एसाव के समान परमेश्वर विहीन न हो जाये जिसे सबसे
बड़ा पुत्र होने के नाते उत्तराधिकार पाने का अधिकार
था किन्तु जिसने उसे बस एक जून के खाने भर के
लिये बेच दिया। 17जैसा कि तुम जानते ही हो बाद में जब
उसने इस वरदान को प्राप्त करना चाहा तो उसे अयोग्य
ठहराया गया। यद्यपि उसने रो-रो कर वरदान पाना
चाहा किन्तु वह अपने किये का पश्चाताप नहीं कर
पाया।

18तुम अग्नि से जलते हुए इस पर्वत के पास नहीं
आये जिसे छुआ जा सकता था और न ही अंधकार,
विषाद और बवंडर के निकट आये हो। 19और न ही
तुरही की तीव्र ध्वनि अथवा किसी ऐसे स्वर के सम्पर्क
में आये जो वचनों का उच्चारण कर रही हो, जिससे
जिन्होंने उसे सुना, प्रार्थना की कि उनके लिये किसी
और वचन का उच्चारण न किया जाये। 20क्योंकि जो
आदेश दिया गया था, वे उसे झेल नहीं पाये: "यदि कोई
पशु तक उस पर्वत को छुए तो उस पर पथराव किया
जाये।"* 21वह दृश्य इतना भयभीत कर डालने वाला
था कि मूसा ने कहा, "मैं भय से थर थर काँप रहा
हूँ।"*

22किन्तु तुम तो सिओन पर्वत, सजीव परमेश्वर की
नगरी, स्वर्ग के यरूशलेम के निकट आ पहुँचे हो। तुम
तो हज़ारों-हज़ार स्वर्गदूतों की आनन्दपूर्ण सभा,
23परमेश्वर की पहली संतानों, जिनके नाम स्वर्ग में
लिखे हैं, उनकी सभा के निकट पहुँच चुके हो। तुम
सबके न्यायकर्त्ता परमेश्वर और उन धर्मात्मा, सिद्ध
पुरुषों की आत्माओं, 24तथा एक नये करार के मध्यस्थ
यीशु और छिड़के हुए उस लहू से निकट आ चुके हो
जो हाबिल के लहू की अपेक्षा उत्तम वचन बोलता है।

25ध्यान रहे! कि तुम उस बोलने वाले को मत नकारो।
यदि वे उसको नकार कर नहीं बच पाये जिसने उन्हें
धरती पर चेतावनी दी थी तो यदि हम उससे मुँह मोड़ेंगे
जो हमें स्वर्ग से चेतावनी दे रहा है, तो हम तो दण्ड से
बिल्कुल भी नहीं बच पायेंगे। 26उसकी वाणी ने उस
समय धरती को झकझोर दिया था किन्तु अब उसने
प्रतिज्ञा की है, "एक बार फिर न केवल धरती को ही
बल्कि आकाशों को भी मैं झकझोर दूँगा।" 27"एक
बार फिर" ये शब्द उस हर वस्तु की ओर इंगित करते
हैं जिसे रचा गया है (यानी वे वस्तुएँ जो अस्थिर हैं) वे
नष्ट हो जायेंगी। केवल वे वस्तुएँ ही बचेंगी जो स्थिर हैं।

28अत: क्योंकि जब हमें एक ऐसा राज्य मिल रहा है,
जिसे झकझोरा नहीं जा सकता, तो आओ हम धन्यवादी
बनें और आदर मिश्रित भय के साथ परमेश्वर की
उपासना करें। 29क्योंकि हमारा परमेश्वर भस्म कर
डालने वाली एक आग है।

निष्कर्ष

13 भाई के समान परस्पर प्रेम करते रहो।
2अतिथियों का सत्कार करना मत भूलो, क्योंकि
ऐसा करते हुए कुछ लोगों ने अनजाने में ही स्वर्गदूतों
का स्वागत-सत्कार किया है। 3बंदियों को इस रूप में
याद करो जैसे तुम भी उनके साथ बंदी रहे हो। जिनके
साथ बुरा व्यवहार हुआ है उनकी इस प्रकार सुधि लो
जैसे मानो तुम स्वयं पीड़ित हो।

4विवाह का सब को आदर करना चाहिये। विवाह
की सेज को पवित्र रखो। क्योंकि परमेश्वर व्यभिचारियों
और दुराचारियों को दण्ड देगा। 5अपने जीवन को धन
के लालच से मुक्त रखो। जो कुछ तुम्हारे पास है, उसी
में संतोष करो क्योंकि परमेश्वर ने कहा है:

"मैं तुझको कभी नहीं छोड़ूँगा, मैं तुझे कभी नहीं
तजूँगा। *व्यवस्था विवरण 31:6*

6इसीलिये हम विश्वास के साथ कहते हैं: "प्रभु मेरी
सहाय करता है, मैं कभी भयभीत न बनूँगा। कोई
मनुष्य मेरा क्या कर सकता है?" *भजन संहिता 118:6*

7अपने मार्गदर्शकों को याद रखो जिन्होंने तुम्हें
परमेश्वर का वचन सुनाया है। उनकी जीवन-विधि के
परिणाम पर विचार करो तथा उनके विश्वास का
अनुसरण करो। 8यीशु मसीह कल भी वैसा ही था,
आज भी वैसा ही है और युग-युगान्तर तक वैसा ही
रहेगा।

9हर प्रकार की विचित्र शिक्षाओं से भरमाये मत
जाओ। तुम्हारे मनों के लिये यह अच्छा है कि वे
अनुग्रह के द्वारा सुदृढ़ बनें न कि खाने पीने सम्बन्धी
नियमों के मानने से, जिनसे उनका कभी कोई भला
नहीं हुआ, जिन्होंने उन्हें माना।

"यदि कोई ... जायें" नर्गमन 19:12

"मैं ... रहा हूँ" व्यवस्था. 9:19

10हमारे पास एक ऐसी वेदी है जिस पर से खाने का
अधिकार उनको नहीं है जो तम्बू में सेवा करते हैं।
11महायाजक परम पवित्र स्थान पर पाप–बलि के रूप
में पशुओं का लहू तो ले जाता है, किन्तु उनके शरीर
डेरों के बाहर जला दिये जाते हैं। 12इसलिये यीशु ने भी
स्वयं अपने लहू से लोगों को पवित्र करने के लिये नगर
द्वार के बाहर यातना झेली। 13तो फिर आओ हम भी
इसी अपमान को झेलते हुए जिसे उसने झेला था, डेरों
के बाहर उसके पास चलें। 14क्योंकि यहाँ हमारा कोई
स्थायी नगर नहीं है बल्कि हम तो उस नगर की बाट
जोह रहे हैं जो आनेवाला है।

15अत: आओ हम यीशु के द्वारा परमेश्वर को स्तुति
रूपी बलि अर्पित करें जो उन ओठों का फल है जिन्होंने
उसके नाम को पहचाना है। 16तथा नेकी करना और
अपनी वस्तुओं को औरों के साथ बाँटना मत भूलो।
क्योंकि परमेश्वर ऐसी ही बलियों से प्रसन्न होता है।

17अपने मार्ग दर्शकों की आज्ञा मानो। उनके अधीन
रहो। वे तुम पर ऐसे चौकसी रखते हैं जैसे उन व्यक्तियों
पर रखी जाती है जिनको अपना लेखा जोखा उन्हें देना
है। उनकी आज्ञा मानो जिससे उनका कर्म आनन्द बन
जाये। न कि एक बोझ बने। क्योंकि उससे तो तुम्हारा
कोई लाभ नहीं होगा।

18हमारे लिए विनती करते रहो। हमें निश्चय है कि
हमारी चेतना शुद्ध है। और हम हर प्रकार से वही
करना चाहते हैं जो उचित है। 19मैं विशेष रूप से आग्रह
करता हूँ कि तुम प्रार्थना किया करो ताकि शीघ्र ही मैं
तुम्हारे पास आ सकूँ।

20जिसने भेड़ों के उस महान रखवाले हमारे प्रभु
यीशु के लहू द्वारा उस सनातन करार पर मुहर लगाकर
मरे हुओं में से जिला उठाया, वह शांति–दाता परमेश्वर
21तुम्हें सभी उत्तम साधनों से सम्पन्न करे। जिससे तुम
उसकी इच्छा पूरी कर सको। और यीशु मसीह के द्वारा
वह हमारे भीतर उस सब कुछ को सक्रिय करे जो उसे
भाता है। युग–युगान्तर तक उसकी महिमा होती रहे।
आमीन!

22हे भाइयो, मेरा आग्रह है कि तुम प्रेरणा देने वाले
मेरे इस वचन को धारण करो मैंने तुम्हें यह पत्र बहुत
संक्षेप में लिखा है। 23मैं चाहता हूँ कि तुम्हें ज्ञात हो कि
हमारा भाई तिमुथियुस रिहा कर दिया गया है। यदि वह
शीघ्र ही आ पहुँचा तो मैं उसी के साथ तुमसे मिलने
आऊँगा।

24अपने सभी अग्रणियों और संत जनों को नमस्कार
कहना। इटली से आये लोग तुम्हें नमस्कार भेजते हैं।
25परमेश्वर का अनुग्रह तुम सब के साथ रहे!